बालक का सामाजिक विकास

SOCIAL DEVELOPMENT OF CHILD

By social growth and development, we mean the increasing ability to get along well with oneself and others, " Sorenson (p. 50)

भूमिका

(INTRODUCTION)

शिशु जन्म के समय सामाजिक प्राणी नहीं होता है। जैसे-जैसे उसका शारीरिक और मानसिक विकास होता है, वैसे ही वैसे उसका सामाजिक विकास भी होता है। अपने परिवार के सदस्यों, अपने समूह के साथियो, अपने समाज की संस्थाओं और परम्पराओं एवं अपनी स्वयं की रुचियों और इच्छाओं से प्रभावित होकर वह अपने सामाजिक व्यवहार का निर्माण और अपना सामाजिक विकास करता है। सामाजिक व्यवहार में स्थिरता न होकर परिवर्तनशीलता होती है। अतः समय और परिस्थितियों के अनुसार उसमें परिवर्तन होता रहता है और सामाजिक विकास एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ता जाता है। इस प्रकार, समाजीकरण की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। सारे व टेलफोर्ड ने लिखा है- "**समाजीकरण की प्रक्रिया दूसरे व्यक्तियों के साथ शिशु के प्रथम सम्पर्क से आरम्भ होती है और आजीवन चलती रहती है।**"

"The process of socialization begins with the infant's first contact with other people and continues throughout life." -Sawrey and Telford (p. 64)

सामाजिक आदर्शों परम्पराओं एवं रूढ़ियों के अनुसार समाज के अन्य लोगों के सहयोग से जो व्यवहार किया जाता है, उसे सामाजिक विकास के अन्तर्गत रखा जाता है। सामाजिक विकास, व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया है। विद्वानों ने सामाजिक विकास की परिभाषायें इस प्रकार की है

1. **हरलॉक-"सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता प्राप्त करना है।"**

"Social development means the attaining of maturity in social relationship."-E. B. Hurlock

2. **सोरेनसन- "सामाजिक अभिवृद्धि और विकास का अर्थ है अपनी और दूसरों की उन्नति के लिए योग्यता की वृद्धि।**

"By social development and growth we mean the increasing ability to get along well with oneself and others." -Sorenson

3. **रॉस-"सहयोग करने वालों में हम की भावना का विकास और उनके साथ काम करने की क्षमता का विकास तथा संकल्प समाजीकरण कहलाता है।"** The development of we feeling in associates and the growth in their capacity and will to act together is called socialization." -Ross

शैशवावस्था में सामाजिक विकास

(SOCIAL DEVELOPMENT IN INFANCY)

क्रो व क्रो (Crow and Crow) (Child Psychology. p. 138) ने लिखा है-"**जन्म के समय,शिशु न तो सामाजिक प्राणी होता है और न असामाजिक पर वह इस स्थिति में बहुत समय तक नहीं रहता है।"** दूसरे व्यक्तियों के निरन्तर सम्पर्क में रहने के कारण उसकी स्थिति में परिवर्तन होना और फलस्वरूप उसका सामाजिक विकास होना आरम्भ हो जाता है। **हरलॉक** (Hurlock) ने इस विकास क्रम का वर्णन निम्न प्रकार किया है

1. पहले माह में शिशु साधारण आवाजों और मनुष्यों की आवाज में अन्तर नहीं जानता है।

2. दूसरे माह में वह मनुष्य की आवाज पहचानने लगता है । वह दूसरे व्यक्तियो को अपने पास देखकर मुस्कुराता है।

3. तीसरे माह में वह अपनी मां को पहचानने लगता है। और यदि वह उसके पास से चली जाती है, तो वह रोने लगता है।

4. चौथे माह में वह आने वाले व्यक्ति को देखता है और जब कोई उसके साथ खेलता है, तब वह हँसता है।

5. पाँचवें माह में वह क्रोध और प्रेम के व्यवहार में अन्तर समझने लगता है।

6. छठे माह में वह परिचित व्यक्तियों को पहचानने और अपरिचित व्यक्तियों से डरने लगता है।

7. आठवें माह में वह बोले जाने वाले शब्दों और हाव-भाव का अनुकरण करने लगता है।

8. एक वर्ष की आयु में वह मना किए जाने वाले कार्य को नहीं करता है।

9. दो वर्ष की आयु में वह वयस्कों के साथ कोई-न-कोई कार्य करने लगता है और इस प्रकार परिवार का सक्रिय सदस्य हो जाता है।

10. तीसरे वर्ष में वह दूसरे बालकों के साथ खेलने लगता है और इस प्रकार उनसे सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है।

11. तीन वर्ष की आयु तक उसका सामाजिक व्यवहार आत्म-केन्द्रित रहता है। पर यदि इस आयु में वह किसी नर्सरी स्कूल में प्रवेश करता है, तो उसके व्यवहार में परिवर्तन आरम्भ हो जाता है और वह नए सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है।

12. पाँचवें वर्ष तक शिशु के सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध में हरलॉक (Hurlock) (p. 270) ने लिखा है- "**शिशु दूसरे बच्चों के सामूहिक जीवन से अनुकूलन करना, उनसे लेन-देन करना और अपने खेल के साथियों को अपनी वस्तुओं में साझीदार बनाना सीख जाता है। वह जिस समूह का सदस्य होता है, उसके द्वारा स्वीकृत प्रतिमान के अनुसार अपने को बनाने की चेष्टा करता है।**"